BA-III (मैथिली प्रतिष्ठा)
पत्र-पाँच
मैथिली साहित्य इतिहास

प्रो० संजीत कुमार राम
अतिथि व्याख्याता
मैथिली विभाग
V.S.J. College Rajnagar
Madhubani (Lnmu)

'गोरक्ष विजय'

गोरक्ष विजय नाटकक रचनाकार छथि - कविकोकिल विद्यापति अछि। प्रतिपाद्य 'गोरक्ष विजय' नाटकक प्रारम्भ शिवार्चना सँ होइत अछि। सूत्रधार एवं नटी सूचना दैत छथि जे महाराज शिव सिंहक आज्ञा सँ 'गोरक्ष विजय' क अभिनय करबाक अछि तत्पश्चात दु योगी मत्स्येन्द्र नाथ आ गोरखनाथ प्रवेश करैछ। मत्स्येन्द्र नाथ गोरक्षनाथ कट्टर अनुयायीक रुप मे प्रख्यात छथि। मत्स्येन्द्रनाथ बालकक हत्या गोरखनाथ द्वारा कएल गेल छलैक जे पश्चात जा क कुलनाथक रुप मे प्रख्यात भेलाह। दोसर दृश्य मे महामन्त्रीक

अधिकार पर प्रकाश देल गेल अछि। द्वारपाल द्वारा योगीक आगमनक सूचना देल अछि। योगी कें देखितहि राजा के भान भ' जाइत छनि जे ई द्वारा हमर पुरान संगी अछि। तत्पश्चात नर्तकीक बीच राजा देखल जाइत छथि। राजत्व प्राप्त करबाक मूल उद्देश्य सांसारिक सुखक उपभोग करब छल। योगी द्वारा प्रस्तुत कयल नृत्य के देखि राजा प्रसन्न भ जाइत छथि आ द्वारा के पुरस्कृत करबाक प्रसंग मे सोचैत छथि कि बीचहि मे हुनक पुत्रक आगमन भ जाइत अछि। किन्तु अकस्मात राजाक पुत्रक मृत्यु भ जाइछ, जाहि सँ ओ विचलित भ' एकर दोषारोपण उक्त द्वारा पर कयल जाइत अछि। राजाक आदेश, पबितहि द्वारा योगी कें बन्दी बनाओल जाइत छनि। योगीवर राजाक पुत्र के जीवित करैत छथि। गोरखनाथक वास्तविक व्यक्तित्वक परिचय मत्स्येन्द्रनाथ के

होइत छनि तखन ओ कहैत छथि जे राजा ओला सँ ओ वास्तविकता कें बिसरि गेल छथि। अतः अनेक युवती सुसज्जित वेश मे रानीक संग रंगमंच पर उपस्थित होइत छथि। रानी के देखिताहि कामलो- लुप राजा अपना कें नियंत्रित करबा मे असमर्थ छथि जाहि पर गोरखनाथ हुनका धिक्कारैत छथि। एहना स्थिति मे राजा वैरागी अ'योगी भ' राजमहलक परित्याग करैत छथि नाटकक समाप्ति गोरखनाथक विजय सँ होइछ तैं एकर नामकरण 'गोरक्ष विजय' राखल गेल अछि।

Sangeet